

खास खोज-खबर तिब्बत के नीचे महाद्वीपीय प्लेटें कहां टकराती हैं, हॉट स्पिंग्स से चला पता **तिब्बत के नीचे महाद्वीपीय प्लेटें कहां टकराती हैं तथा क्या हो सकता है असर**

● **मंथन विदेश व्यूरो**
स्टैनफोर्ड। भारतीय और एशियाई महाद्वीपीय पहाड़ों के निर्माण करने वाली प्लेटें दुनिया की सबसे बड़ी और सबसे ऊंची भूगर्भीय संरचनाओं में से एक हैं। ये प्लेटें हिमालय पर्वत और तिब्बती पठार के निर्माण करने के लिए अतीत में आपस में टकराई और इनका टकराना आज भी जारी है। विशेषज्ञों ने एक दूसरे के विपरीत सिद्धांतों का प्रस्ताव दिया है कि कैसे सतह के नीचे टेक्टोनिक प्लेटों ने विशाल संरचना तैयार की। अब वैज्ञानिकों ने 225 गर्म झरनों या हॉट स्पिंग्स से भू-रासायनिक आंकड़ों का उपयोग करते हुए सतह के नीचे होने वाली प्रक्रियाओं का पता लगाया है। भू-वैज्ञानिकों के बीच एक प्रमुख बहस यह है कि महाद्वीपीय टकराव समुद्री टकराव की होता है या नहीं। क्योंकि इसके बारे में बहुत कम जानकारी है, क्लेम्पर ने अपने सिद्धांत को सिद्ध करने हेतु नमूने एकत्र किए। इसके लिए उन्होंने तिब्बत और भारत में एक दशक से अधिक का समय बिताया। उन्होंने बताया कि सतह पर बुदबुदाती रसायनों का उपयोग यह समझने के लिए किया जा सकता है कि पहाड़ के 50 मील नीचे क्या हो रहा है। शोध से पता चलता है कि ठंडी प्लेट केवल दक्षिण में, हिमालय के नीचे पाई जाती है, जबकि आगे उत्तर में, भारत अब इसके



ऊपर तिब्बत को नहीं छोड़ा है। यह तिब्बत से गर्म मॉल्ट की एक कॉल द्वारा अलग किया गया है। क्लेम्पर ने बताया कि यह आश्चर्यजनक है कि अब हमारे पास यह उल्लेखनीय रूप से अच्छी तरह से परिभाषित सीमा है जो एक प्लेट की सीमा के ऊपर की सतह पर कुछ किलोमीटर चौड़ी है जो कि 100 किलोमीटर गहरी है। महाद्वीपीय टकराव के आधार पर शोधकर्ताओं ने अनुमान लगाया है कि समुद्र के स्तर पर दो महाद्वीपों को एक साथ तब तक खींच लिया जब तक कि वे टकरा नहीं गए। जिससे पर्वत निर्माण के लिए सबडक्शन या प्लेटों के टकराने का क्षेत्र बंद हो गया। तिब्बत के नीचे महाद्वीपीय सीमा का यह प्रमाण इस संभावना का परिचय देता है कि महाद्वीपीय क्रस्ट तरल पदार्थ छोड़ रहा है और पिघल रहा है, ठीक उसी

तरह जैसे समुद्री सबडक्शन में होता है। 1960 के दशक में, प्लेट टेक्टोनिकस के सिद्धांत ने यह समझाकर पृथ्वी विज्ञान में क्रांति ला दी कि कैसे भूगर्भिक प्लेटें अलग-अलग और एक-दूसरे के ऊपर चढ़ती हैं, जिससे पहाड़ का निर्माण, ज्वालामुखी विस्फोट और भूकंप आते हैं। लेकिन शोधकर्ता इस बारे में बहुत कम जानते हैं कि प्लेटें जिस तरह से घूमती हैं, वे इस तरह क्यों घूमती हैं। क्लेम्पर और उनके सहयोगियों ने भूकंपीय आंकड़ों का उपयोग करते हुए हिमालय के टकराव क्षेत्र की छवि बनाई और पाया कि जैसे ही भारतीय टेक्टोनिक प्लेट दक्षिण से घूमती है, प्लेट का सबसे मोटा और सबसे मजबूत हिस्सा तिब्बती पठार के नीचे झुक जाता है और भारतीय प्लेट पर वाष्प का कारण बनता है। दक्षिणी तिब्बत को हाल ही में एक समृद्ध खनिज प्रांत के रूप में भी पहचाना गया है, जिसमें सोना, तांबा, सीसा, जस्ता और अन्य खनिज जमा हैं, जिन्हें महाद्वीपीय टकराव के केवल पुराने मॉडल का उपयोग करके समझना मुश्किल है।

ये काफी खूबसूरत हैं, हालांकि, दिखने में बेहद अजीबोगरीब हैं
दुनिया की 9 सबसे अजीबोगरीब मकड़ियां, कोई मोर जैसी तो कोई हंसने वाली! देखकर नहीं होगा यकीन

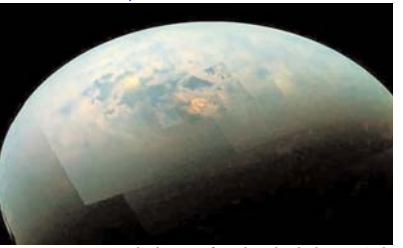
● **मंथन विदेश व्यूरो**
न्यूज डेस्क। प्रकृति ने दुनिया में कई ऐसी अजीबोगरीब मकड़ियां बनाई हैं जो काफी खूबसूरत हैं, हालांकि, दिखने में बेहद अजीबोगरीब हैं। इनमें से कुछ जहरीली भी हैं। आज हम ऐसी ही 9 मकड़ियों के बारे में बताने जा रहे हैं। दुनिया अजीबोगरीब जीवों से भरी हुई है। यहां आपको कई ऐसे प्राणी मिल जाएंगे, जो आपकी सोच से भी परे होंगे। ऐसी कई मकड़ियां भी मौजूद हैं। आपने अपने घर की मकड़ियों को देखा होगा, और उन्हें देखकर या तो डर लगा होगा या फिर घिन आई होगी। पर प्रकृति ने कुछ ऐसी मकड़ियां भी बनाई हैं, जिन्हें देखकर शायद ही आपको डर लगे, मगर घिन तो बिल्कुल भी नहीं आएगी। ये काफी खूबसूरत हैं, हालांकि, दिखने में बेहद अजीबोगरीब हैं। इनमें से कुछ जहरीली भी हैं। आज हम ऐसी ही 9 मकड़ियों के बारे में बताने जा रहे हैं। हवाई हेपी फेस स्पाइडर- हेपी फेस से आप समझ ही गए होंगे कि ये मकड़ी क्यों हैरान करने वाली है। दरअसल, इस मकड़ी के शरीर पर मुस्कुराता हुआ चेहरा बना हुआ है। असेसिन स्पाइडर- नाम से आप समझ गए होंगे कि ये मकड़ी हत्याारी है। इनके जबड़े काफी बड़े होते हैं। ये दूसरी मकड़ियों को बड़े ही चाव से खाती हैं। इन्हें पेलिकन स्पाइडर भी कहते हैं। नर्सरी वेब स्पाइडर- नहीं, ये मकड़ी नर्सरी में नहीं पढ़ती है। रिपोर्ट्स के अनुसार इस प्रजाति की नर मकड़ी जब प्रजनन करती है, तब वो मादा को अपने जाल में बांध लेती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि संबंध बनाने के बाद, मादा मकड़ी को बहुत ज्यादा भूख लगती है, और वो ऐसे वक्त पर नर को भी खा सकती है।



आंग्री फेस स्पाइडर- इस मकड़ी की आंखें काफी भयानक होती हैं। ये इतनी बड़ी होती हैं कि कोई भी इसे देखकर डर सकता है। **वीवर एंट स्पाइडर-** ये चींटी नहीं है, बल्कि एक तरह की मकड़ी है। हैरानी इस बात की है कि ये चींटी ही खाती है। **पीकॉक स्पाइडर-** मोर की खूबसूरती देखकर आपको खुशी मिलती होगी, पर जब आप इस मकड़ी को मोर जैसा रूप धारण किए देखेंगे, तो आपको हैरानी होगी। इसके शरीर का पिछला हिस्सा मोर की तरह रंगीन होता है। **जायंट गोल्डन ऑर्ब वीवर-** इन मकड़ियों के पैर इतने बड़े होते हैं, कि पैर से अगर इनकी लंबाई जोड़ी जाए तो ये 8 इंच तक के हो सकते हैं। इनके जाले इतने मजबूत होते हैं कि कई बार उसमें छोटे पक्षी और चमगादड़ भी फंस जाते हैं। **डाइविंग बेल स्पाइडर-** ये मकड़ी पानी के नीचे रहती है। यूरोप और पश्चिमी एशिया में पाई जाने वाली ये मकड़ी इकलौती ऐसी मकड़ी है जो अधिकतर वक्त पानी में बिताती है। **प्लांट ईटिंग जॉपिंग स्पाइडर-** ये मकड़ीफूलों का पराग पीती है। इस तरह जब इन्हें शिकार नहीं मिलता है, तो ये भूखी नहीं मरती।

स्पेशल खबर शनि के चंद्रमा 'टाइटन' में नदियां, झीलें और बारिश भरे समुद्र हैं **'टाइटन' पर भी हो सकती है जीवन की सम्भावना, काफी कुछ पृथ्वी से मिलती है इसकी संरचना**

● **मंथन विदेश व्यूरो**
स्टैनफोर्ड। वैज्ञानिकों ने टाइटन के भूदृश्य निर्माण का एक मॉडल तैयार किया है, जिसमें पृथ्वी जैसी ही परग्रही दुनिया का पता चला है। वैज्ञानिकों के अनुसार शनि का यह चंद्रमा 'टाइटन' अंतरिक्ष से देखने पर काफी हद तक पृथ्वी जैसा ही दिखता है, जहां नदियां, झीले, कैनियन, रेत के टीले और समुद्र हैं, जो बारिश के पानी से भरे हैं। इन सबको भी मौसम संचालित करता है। अनुमान है कि टाइटन पर भी एक घना वातावरण मौजूद है जो बारिश और मौसम जैसी घटनाओं को नियंत्रित करता है। गौरतलब है कि 'टाइटन' शनि ग्रह का सबसे बड़ा चंद्रमा है और सौरमंडल का दूसरा सबसे बड़ा प्राकृतिक उपग्रह है। हमारे सौरमंडल का यह एकमात्र ऐसा चंद्रमा है जो अपने घने वातावरण के लिए जाना जाता है। इतना ही नहीं यह पृथ्वी के अलावा अंतरिक्ष में एकमात्र ऐसा ज्ञात ऑक्जेनैट है जिस की सतह पर स्थिर रूप में मौजूद तरल के स्पष्ट प्रमाण मिले हैं। हालांकि देखने में ये परिदृश्य (नदियां, झीले, कैनियन, रेत के टीले और समुद्र) बहुत हद तक हमारी धरती जैसे ही लगते हैं, लेकिन वो ऐसे मैटेरियल से बने हैं जो निस्संदेह हमारी धरती से अलग हैं। इसकी बर्फीली सतह पर तरल रूप में मीथेन की नदियां बहती हैं और नाइट्रोजन युक्त हवाएं हाइड्रोकार्बन से बने रेत के टीलों का निर्माण करती हैं देखा जाए तो हमारी धरती की तुलना में टाइटन पर इस मैटेरियल की उपस्थिति, जिनके यांत्रिक गुण हमारे सौर मंडल में ज्ञात अन्य तलछट पिंडों को बनाने वाले सिलिकेट-आधारित पदार्थों से काफी भिन्न हैं, टाइटन के परिदृश्य निर्माण को कहीं ज्यादा गूढ़ बनाते हैं।



टाइटन पर कैसे निर्मित हो रहे हैं रेत, टीले और मैदान: ऐसे में टाइटन पर मौजूद यह हाइड्रोकार्बन-आधारित पदार्थ कैसे रेत में बदलते हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वहां कितनी बार हवाएं चलती हैं जबकि जमीन पर मौजूद रेत के लिए नदियों का प्रवाह जिम्मेवार है। इस बारे में स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी के भूविज्ञानी मैथ्यू लपोत्रे और उनके सहयोगियों ने मॉडल की मदद से स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि कैसे टाइटन पर टीले, मैदान और अनजाने इलाकों का निर्माण हुआ है। वैज्ञानिकों के मुताबिक टाइटन पर मौजूद ठोस कण या तलछट, नरम हाइड्रोकार्बन के कणों से बने हैं, जिनके धूल में बदलने की सम्भावना कहीं ज्यादा है। फिर भी, टाइटन के भूमध्यरेखीय टीले कई सैकड़ों या हजारों वर्षों से सक्रिय हैं, जो स्पष्ट करता है कि इन अक्षांशों पर कोई न कोई ऐसा तंत्र जरूर है जो इन रेत के आकार के कणों का लगातार निर्माण कर रहा है। वैज्ञानिकों ने उस परिकल्पना का अनुमान लगाया है, जिसके अनुसार जब यह कण हवा या मीथेन की नदी के जरिए प्रवाहित होते हैं और उनका जमाव होता है तो वो घर्षण की वजह से रेत कणों में बदल सकते हैं।

---मंथन दृष्टि विज्ञापन दरें---

फुल पेज ब्लैक एण्ड व्हाइट	=	38000 रुपए
फुल पेज कलर	=	60,000 रुपए
हॉफ पेज ब्लैक एण्ड व्हाइट	=	19,000 रुपए
हॉफ पेज कलर	=	30,000 रुपए
क्वार्टर पेज ब्लैक एण्ड व्हाइट	=	10,000 रुपए
क्वार्टर पेज कलर	=	15,000 रुपए

नोट :-

1. ब्लैक एण्ड व्हाइट विज्ञापन का भुगतान 42 रूपए प्रति वर्गसेमी की दर से रहेगा।
2. कलर विज्ञापन का भुगतान 65 रूपए प्रति वर्गसेमी की दर से रहेगा।

अभी तक ये स्पष्ट नहीं है कि इन जहाजों का किया क्या जाएगा लेकिन इनकी संख्या दिन ब दिन बढ़ती जा रही है
ये है दुनिया का सबसे बड़ा हवाई जहाज का कब्रिस्तान, जहां दफन है हजारों कबाड़

● **मंथन विदेश व्यूरो**
वाशिंगटन। दुनिया में ऐसी कई जगहें हैं जो बेहद मशहूर हैं। दुनिया के ज्यादातर लोग इन जगहों के बारे में जानते हैं। साथ ही दूर-दूर से लोग इन्हें देखने भी आते हैं। वैसे आजतक आपने कब्रिस्तान में लोगों को बाँड़ी को दफन होते देखा-सुना होगा। जब एक इंसान की सांसें थम जाती है, उसके दिल की धड़कन रुक जाती है, तब उसकी बाँड़ी को कब्रिस्तान में दफन कर दिया जाता है। यानी कब्रिस्तान वो जगह है, जहां इंसान की मौत होने के बाद उसे रेस्ट करने के लिए छोड़ दिया जाता है। लेकिन क्या आपने कभी हवाई जहाज के कब्रिस्तान के बारे में सुना है? जी हां, हम कोई मजाक नहीं कर रहे। दुनिया में एक ऐसी जगह है, जिसे हवाई जहाज का



कब्रिस्तान कहा जाता है। इस जगह पर हजारों की संख्या में कबाड़ हो चुके एरोप्लेन को यहाँ ही छोड़ दिया गया है। इन जहाजों के अंदर के कल-पुर्जे, जो आगे इस्तेमाल किये जा सकते हैं, उन्हें तो निकाल लिया जाता है लेकिन बाहर की बाँड़ी को यहाँ ही डंप कर दिया जाता है। कई सालों से कबाड़ एरोप्लेन के जमा होते-होते अब ये जगह जहाजों का कब्रिस्तान बन गया है। **दुनिया में सबसे बड़ा:** एरिजोना के डेविंसमोथान एयरफोर्स बेस को दुनिया का

सबसे बड़ा हवाई जहाज का कब्रिस्तान कहा जाता है। यहाँ करीब साढ़े चार हजार खराब एरोप्लेन खड़े हैं। दरअसल, जब कोई प्लेन खराब हो जाता है, तो उसे यहाँ लाकर खड़ा कर दिया जाता है। इसके बाद जिनके सुधार की संभावना होती है उसे सुधारा जाता है। बाकि के कल-पुर्जे निकाल लिए जाते हैं। इसके बाद पार्ट्स को दूसरे विमान के निर्माण में इस्तेमाल किया जाता है जबकि बाहर की बाँड़ी ऐसी ही खड़ी रह जाती है। **पहले था ट्रिस्ट स्पॉट:** इस जगह पर द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से करीब साढ़े चार हजार विमान खड़े हैं। इसमें से कुछ का इस्तेमाल नासा ने भी किया है। पहले इस जगह पर ट्रिस्ट आ सकते थे। लेकिन बीते कुछ सालों से यहाँ लोगों की एंट्री बंद कर दी गई है।

खास साप्ताहिक फोटो असम के नलबाड़ी शहर में स्थित भगवान कृष्ण को समर्पित 500 वर्ष पुराना बिल्लेश्वर मंदिर एक प्रसिद्ध मंदिर



बोलती तस्वीर बिल्लेश्वर मंदिर लगभग 500 साल पहले निर्मित अपनी शानदार उपस्थिति के साथ संस्कृति और सुंदरता के मिश्रण का एक आदर्श उदाहरण है। यह मंदिर भगवान कृष्ण को समर्पित था, जो असम के नलबाड़ी शहर में एक प्रसिद्ध मंदिर है। इस मंदिर के निर्माण के पीछे की कहानी एक गाय और शहर के एक प्रसिद्ध पुजारी की है। पुजारी की गाय विरिना की झाड़ियों पर ही दूध देती थी, तब नगर के राजा ने उस विशेष स्थान को खोदने का आदेश दिया। खुदाई के बाद एक शिवलिंग निकला और फिर इस बिल्लेश्वर मंदिर का निर्माण किया गया। दिलचस्प बात यह है कि भगवान कृष्ण का मंदिर भी यहीं बनाया गया था, यहाँ तक कि वहाँ शिवलिंग भी मिला।